स्वच्छता के जादू और कला के संगम से निखरता हिंदुस्तान

डॉ. सोनाली नरगुंदे
कुलदीप नागेश्वर पंवार
पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला देअविवि इंदौर म.प्र.

प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश जोकि अपने प्राचीन संस्कृतियों अध्यात्म और विशेषताओं से दुनिया भर में अपनी एक अमिट छाप बनाता है। अपनी कला और विभिन्न नेताओं के कारण भारत ने दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। साथ ही अपने इन्हीं कलाकारों की बदौलत भारत में कई नए कीर्तिमान भी रचे है।
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को देश भर में एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हुई। महात्मा गांधी ने अपने जीवन काल के दौरान अपने कार्य क्षेत्र में स्वच्छता को लेकर कई प्रयोग किए जिससे आम जनजीवन को स्वास्थ्य संबंधित लाभ मिले। महात्मा गांधी के स्वच्छता अभियान को आगे बढ़ाते हुए स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई।

स्वच्छता के लिए जन आंदोलन की अगुवाई करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों से आह्वान किया कि वे साफ और स्वच्छ भारत के महात्मा गांधी के सपने को पूरा करें। प्रधानमंत्री ने स्वयं झाड़ू उठाई और देश भर में स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन बनाते हुए उन्होंने कहा कि लोगों को न स्वयं गंदगी फैलानी चाहिए और न किसी और को फैलाने देनी चाहिए। उन्होंने 'ना गंदगी करेंगे, ना करने देंगे' का मंत्र दिया।
श्री मोदी ने स्वच्छता अभियान में शामिल होने के लिए नौ लोगों को आमंत्रित भी किया और उनसे अनुरोध किया कि वे सभी नौ अन्य लोगों को इस पहल से जोड़ें।

इस अभियान में शामिल होने के लिए लोगों को आमंत्रित करने के कारण स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय आंदोलन बन गया। स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से लोगों में जिम्मेदारी की भावना आई। देश भर में लोग सक्रिय रूप से स्वच्छ भारत अभियान में शामिल हो रहे हैं और महात्मा गांधी का 'स्वच्छ भारत' का सपना अब साकार होने लगा है।

साफ़-सफ़ाई के महत्व को समझते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय परिवारों की उन स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का भी जिक्र किया जो उन्हें घर में समुचित शौचालयों के अभाव के कारण झेलनी पड़ती हैं।

समाज के विभिन्न वर्गों के लोग आगे आए और सफाई के इस जन आंदोलन में शामिल हुए। सरकारी अधिकारियों से लेकर जवानों तक, बॉलीवुड अभिनेताओं से लेकर खिलाड़ियों तक, उद्योगपतियों से

लेकर आध्यात्मिक गुरुओं तक, सभी इस पवित्र कार्य से जुड़े। देश भर में लाखों लोग दिन-प्रति-दिन सरकारी विभागों, एनजीओ और स्थानीय सामुदायिक केंद्रों के स्वच्छता कार्यक्रमों से जुड़ रहे हैं। होने से में सफाई को लेकर जागरुकता आई लोगों। सफ़ाई अभियानों के निरंतर आयोजनों के साथ-साथ देश भर में नाटकों और संगीत के माध्यम से सफ़ाई के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

फ़िल्मी दुनिया और खेल जगत के सितारों ने निभाई जागरूकता में अहम भूमिका

बॉलीवुड हस्तियों से लेकर टीवी कलाकार भी सक्रिय रूप से इस अभियान में शामिल हुए। अमिताभ बच्चन, आमिर खान, कैलाश खेर, प्रियंका चोपड़ा जैसी प्रसिद्ध हस्तियों और सब टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की पूरी टीम ने स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दिया। स्वच्छ भारत अभियान में सचिन तेंदुलकर, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल और मैरी कॉम एवं अन्य कई खिलाड़ियों के योगदान भी सराहनीय हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर, जमीनी स्तर पर किये जा रहे कामों को बल प्रदान करने के लिये विभिन्न कार्यक्रम और आयोजन किये जाते हैं। इनके अन्तर्गत किये जा रहे कामों को सन्देश के रूप में प्रचारित करने, इनकी चर्चाओं को ताजा रखने और जनआन्दोलन को गुन्जायमान रखना भी अभियान का महत्त्वपूर्ण अंग है। गाँवों में शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देने के लिये,मई 2017 में पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय ने दरवाजा बन्द नाम से एक नया आक्रामक अभियान प्रारम्भ किया है।

दरवाजा बन्द एक प्रतीक है, खुले में शौच करना चाहिए इसके माध्यम से यह सन्देश दिया गया है। सुप्रसिद्ध अभिनेता अभिताभ बच्चन के नेतृत्व में इस कार्यक्रम को उन लोगों के व्यवहार में परिवर्तन के लिये तैयार किया गया है, जिनके घरों में शौचालय तो हैं, लेकिन वे उनका इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। अभिनेत्री अनुष्का शर्मा द्वारा गाँवों में महिलाओं को इस अभियान में सम्मिलित होने और नेतृत्वकारी भूमिका अदा करने के लिये प्रोत्साहित किया गया है।

इन ब्रांड एंबेसडरों द्वारा मास मीडिया के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने से राष्ट्रीय स्तर पर अभियान को जबरदस्त मान्यता मिली है। मुख्यधारा के फिल्म उद्योग में भी स्च्छता के सरोकार ने अपनी जगह बनाई है। इसमें, टॉयलेटः एक प्रेम कथा, उल्लेखनीय फिल्म है, जिसमें अक्षय कुमार और भूमि पेडनेकर मुख्य किरदार में हैं। इसमें स्वच्छता के सन्देश, इसके प्रति जागरुकता के साथ जमीनी हकीकत को भी उजागर किया गया है और इस अभियान द्वारा धरातल पर किये गए कामों को भी बताया गया है।

यह एक पत्नी की कहानी है जो अपनी ससुराल में शौचालय नहीं होने के कारण अपने पति का घर छोड़ देती है। यह एक असाधारण मामला था, परन्तु स्वच्छ भारत मिशन के शुरू होने के बाद से, ग्रामीण भारत में महिलाओं का अपने अधिकार के लिये संघर्ष में शौचालय एक जीवन्त विषय बन गया है।

रेडियो, एफएम के जादूगरों ने किया स्वच्छता के नारे को बुलंद
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर प्रसारित होने वाले अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में लगातार देश भर के विभिन्न व्यक्तियों एवं संगठनों के उन प्रयासों की सराहना की जिससे स्वच्छ भारत अभियान को व्यापक रूप से सफ़ल बनाने में मदद मिली। इसके साथ ही रेडियो एफएम पर अपनी आवाज का जादू बिखेरने वाले रेडियो जॉकी रौनक और नावेद समेत कई लोकप्रिय रेडियो जॉकी ने स्वच्छता की इस मुहीम को जन-जन तक पहुँचाने में अपनी भूमिका अदा की है।

आम जन में से निकला एक सफाईमित्र
स्वच्छ भारत अभियान के तहत '#MyCleanIndia' का भी शुभारंभ किया गया ताकि देश भर में सफ़ाई कार्य करने वाले लोग अपने कार्यों को सबके सामने रख सकें।
स्वच्छ भारत अभियान लोगों का जोरदार समर्थन पाकर 'जन आंदोलन' बन गया। आम नागरिक भी बड़ी संख्या में आगे आए और उन्होंने साफ़-सुथरे भारत का प्रण लिया। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत के बाद सड़कों की सफ़ाई के लिए हाथों में झाड़ू थामना, सफाई पर ध्यान केंद्रित करना और स्वच्छ माहौल बनाने की कोशिश लोगों की आदत बन गई। लोग इस अभियान में शामिल हो रहे हैं और इस संदेश को फैलाने में मदद कर रहे हैं कि 'ईश्वर की भक्ति के बाद स्वच्छता सबसे बड़ी भक्ति है'।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण, सामुदायिक शौचालय और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत स्तर पर पारस्परिक संवाद, कार्यान्वयन और वितरण तंत्र को मज़बूती के साथ-साथ लोगों में व्यावहारिक बदलाव पर जोर दिया गया है और राज्यों को यह छूट दी गई है कि वे वितरण तंत्र को इस तरह से डिजाईन करें कि उसमें स्थानीय संस्कृतियों, प्रथाओं, उनके भावों एवं मांगों का ध्यान रखा गया हो। शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि में 2,000 की वृद्धि करते हुए इसे 10,000 से 12,000 कर दिया गया है। ग्राम पंचायतों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए भी राशि आवंटित की गई है।

स्वच्छ शक्ति

8 मार्च 2017 स्वच्छ शक्ति का आयोजन अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस, महात्मा मन्दिर, गाँधी नगर में किया गया। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर सभा को सम्बोधित किया। इस मौके पर देश भर से लगभग 6000 चुनिन्दा महिला सरपंच, जमीनी स्तर पर काम करने वालों ने शिरकत की और स्वच्छता चैम्पियंस को ग्रामीण भारत में स्वच्छ भारत का सपना साकार करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिये सम्मानित किया गया।

स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि प्रतियोगिता
(17 अगस्त से 8 सितम्बर) माननीय प्रधानमंत्री ने स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि के तहत 2022 तक नए भारत के निर्माण के लक्ष्य का आह्वान किया। इस सपने के परिदृश्य में पेयजल व स्वच्छता मंत्रालय ने स्वच्छता को जन आन्दोलन बनाने की दिशा में 17 अगस्त से 8 सितम्बर तक देश भर में फिल्म निबन्ध व चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

दरवाजा बन्द मीडिया अभियान

व्यवहारगत बदलाव के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए दरवाजा बन्द शीर्षक से एक गम्भीर मास मीडिया अभियान चलाया गया जिसमें लोग खासकर पुरुषों द्वारा शौचालय के प्रयोग को प्रमोट करने का प्रयास किया गया। इसमें अमिताभ बच्चन का सहयोग रहा। इस अभियान में हिन्दी समेत 9 भाषाओं में 5 टीवी व रेडियो स्पॉट शामिल थे और इसे देश भर में सफलतापूर्वक शुरू किया गया।

नमामि गंगे

नमामि गंगे कार्यक्रम जल संसाधन मंत्रालय की एक पहल है जिसके तहत गंगा तट पर बसे गाँवों को खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाना है और ठोस व तरल कचरा प्रबन्धन की दिशा में आ रही समस्याओं को पेयजल व स्वच्छता मंत्रालय द्वारा दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के 52 जिलों के सभी 4470 गाँवों को राज्य सरकारों की मदद से खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) घोषित किया गया है। अब मंत्रालय ने एनएमसीजी के सहयोग से गंगा तट पर बसे 24 गाँवों को गंगा ग्राम में तब्दील करने का प्रयास कर रहा है।

स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े की शुरुआत

सितम्बर 2017 में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े में 9 करोड़ से अधिक लोगों ने अपने समुदायों के साथ स्वच्छता के लिये श्रमदान किया, स्वच्छता की शपथ ली, साफ-सफाई पर निबन्ध लिखे, चित्र और फिल्में बनाई। इस तरह यह पखवाड़ा नागरिक भागीदारी को बढ़ाने के लिये एक मंच बन गया। अनेक विख्यात हस्तियाँ समर्थन में आगे आई, हॉकी टीम ने बंगलुरू को साफ करने का बीड़ा उठाया, राजनीतिक नेताओं ने पूरे देश में स्वच्छता अभियानों का उद्घाटन किया।

भारतीय क्रिकेट टीम ने भी धब्बों को साफ कर अभियान में सहभागिता की स्वच्छता पर लघु वीडियो बनाए गए, जिन्हें उनके मैचों के टीवी शो के दौरान प्रसारित हुए। इसने अभियान को गति प्रदान की और इसे नई उँचाई पर पहुँचाया। समाज की सहभागिता बढ़ने के साथ स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) आगे बढ़ा है।

भारत की ही तरह अन्य विभिन्न देशों में भी स्वच्छता अभियान की सफलता की राह में अनेक रोड़े हैं जिनकी वजह से अभियान की कामयाबी कठिन एवं जटिल हो जाती है। इन समस्याओं का

सफलतापूर्वक सामना करने के लिये, स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत राज्यों में अनुकूल कार्य योजनाओं को तैयार करने की दृष्टि से पर्याप्त लचीलापन बरता गया है।

स्थानीय लोक कलाकारों से अपनी स्थानीय भाषाओं में फैलाई जागरूकता
अभियान में क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग, अभियान को प्रभावी बनाने के लिये स्थानीय लोक कलाकारों का उपयोग, वरिष्ठ नागरिकों और अन्यथा सक्षम लोगों के लिये अनुकूलित शौचालय प्रौद्योगिकी आदि समाधान इसमें सम्मिलित हैं। इसमें राज्यों पर किसी प्रकार की कोई पाबन्दी नहीं है।

देश में खुले में शौच मुक्त गाँवों की संख्या 300,000 से अधिक हो चुकी है। यहाँ यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि इनमें से कई जिलों में खुले में शौच से मुक्त लक्ष्य हासिल करने में अनेक चुनौतियों से गुजरना पड़ा है। अन्य कई जिले हैं जिनके लिये इन जिलों के अनुभव काम आ सकते हैं। पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय (एमडीडब्ल्यूएस) जिला एवं विकास खण्डों के स्तर पर प्रशासकों को इन अनुभवों से सीखने के लिये अनेक प्रकार से पहले ले रहा है।

उदाहरण के लिये राजस्थान के शुष्क थार मरुस्थल में स्थित बीकानेर जिले में स्वच्छता कार्यक्रम के दौरान अनेक सांस्कृतिक और भौगोलिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा लेकिन जब बैंकों बिकानो शुरू किया गया, तो सभी आश्चर्य चकित रह गए।

लगभग 3.5 लाख स्वच्छाग्रहियों की वाहिनीयों का गठन

देश के सभी गाँवों में स्वच्छाग्रहियों की वाहिनी बनाई गई हैं विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इसके सदस्यों की बहुआयामी क्षमताओं को विकसित किया गया। ये स्वच्छता के वे अग्रिम सिपाही हैं, जिनके माध्यम से अभियान को अन्तर-व्यक्तिगत संवाद (आईपीसी) के जरिए आधारभूत, गहराई और व्यापक स्तर पर विकसित किया जाता है। वर्तमान में, प्रबन्धन सूचना प्रणाली (एमआईएस) में लगभग 3.5 लाख स्वच्छताग्रही पंजीकृत हैं और यह संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

गाँव की बैठकों के दौरान स्वच्छाग्रही जन-भावनाओं को उद्वेलित करने में प्रत्यक्ष भूमिका अदा करते हैं। सामुदायिक दृष्टिकोण से स्वच्छता कार्यक्रम (सीएएस) के अन्तर्गत सभी जिलों में प्रमुख प्रशिक्षक (मास्टर ट्रेनर) के माध्यम से सर्वेक्षण और बैठकों का आयोजन किया जाता है।

ग्रामीणों को शौचालय बनाने के महत्त्व के साथ भावनात्मक रूप से प्रेरित किया जाता है। इसके लिये मानव के व्यवहार को संचालित करने वाले विभिन्न पक्ष, जैसे कि परिवार के प्रति प्रेम, बच्चों की देखभाल, सामाजिक स्तर, स्वाभिमान, समाज में सम्मान आदि भावों को जागृत किया जाता है। प्रतिष्ठा या निजी गरिमा, सुरक्षा और स्वास्थ्य पर जोर देने के लिये गन्दगी के प्रति घृणा या मातृत्व की भावनाओं को प्रेरित किया जाता है।

लाल किले से 2 अक्टूबर 2014 को अपने ऐतिहासिक सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत के लिये आह्वान किया और फिर इस असाधारण तथा साहसिक कार्य में सफलता के लिये उन्होंने पथ प्रदर्शन किया। 2014 के बाद से, शौचालय युक्त घरों की संख्या का प्रतिशत दो गुना बढ़ चुका है। शौचालय युक्त घर सिर्फ 3 वर्षों के भीतर 6 करोड़ हो गए हैं। ये 2014 में 39 प्रतिशत थे जो अब बढ़कर 76 प्रतिशत से अधिक हो चुके हैं।

इन तीन वर्षों में स्वच्छता मोर्चे पर देश ने जो यह उपलब्धि हासिल की है, वह आजादी के 67 वर्षों के बराबर है! सात राज्यों (सिक्किम, केरल, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, गुजरात और अरुणाचल प्रदेश) के ग्रामीण इलाके और दो केन्द्र शासित प्रदेश (चंडीगढ़ और दमन और दीव) खुले शौच मुक्त (ओडीएफ) हो चुके हैं।

खुले में शौच से मुक्ति पाने हेतु वानर सेना की मदद
खुले में शौच की समस्या को कम करने की दिशा में स्वच्छ भारत अभियान की अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं। इस अभियान में व्यवहार परिवर्तन, जरूरत-आधारित क्षमता निर्माण और परिणामों के लगातार आकलन पर जिस प्रकार जोर दिया गया उसके बदौलत ही यह कामयाबी मुमकिन हो सकी है।
भारत की ही तरह अन्य विभिन्न देशों में भी स्वच्छता अभियान की सफलता की राह में अनेक रोड़े हैं जिनकी वजह से अभियान की कामयाबी कठिन एवं जटिल हो जाती है। इन समस्याओं का सफलतापूर्वक सामना करने के लिये, स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत राज्यों में अनुकूल कार्य योजनाओं को तैयार करने की दृष्टि से पर्याप्त लचीलापन बरता गया है। अभियान में क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग, अभियान को प्रभावी बनाने के लिये स्थानीय लोक कलाकारों का उपयोग, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों के लिये अनुकूलित शौचालय प्रौद्योगिकी आदि समाधान इसमें सम्मिलित हैं। इसमें राज्यों पर किसी प्रकार की कोई पाबंदी नहीं है।भारत में पिछले चार दशक में देश में विभिन्न सरकारों द्वारा ग्रामीण स्वच्छता के लिये अनेक कार्यक्रम शुरू किये गए है।

देश में स्वच्छ भारत अभियान के रूप में इस प्रकार का अपूर्व जन उभार पहले कभी नहीं देखा गया। यह दुनिया का सबसे बड़ा स्वच्छता कार्यक्रम है। स्वच्छ भारत अभियान अपने पूर्व निर्धारित प्रारूप से भी आगे निकल चुका है, यह जनसमुदाय की व्यापक भागीदारी पर आधारित एक व्यापक जन आन्दोलन का रूप लेता जा रहा है।

प्रतिस्पर्धा से बड़ी जागरूकता

स्वच्छता मिशन को लेकर लगातार लोगों में बढ़ रही प्रतिस्पर्धा से स्वच्छ भारत अभियान को नया आयाम प्राप्त हुआ है स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार 4 वर्षों तक अव्वल रहे शहर इंदौर में देशभर के साथ-साथ विदेश से भी लोग स्वच्छता मॉडल को देखने समझने के लिए आ रहे हैं। इसके साथ ही इंदौर प्रशासन व यहां के रहवासियों द्वारा स्वच्छता को लेकर नए-नए उपाय किए जा रहे हैं।

स्वच्छता को लेकर आपसी प्रतिस्पर्धा ने आम नागरिक को भी एक सफाई मित्र में तब्दील कर दिया है जिससे इंदौर सफाई को लेकर निरंतर प्रगति कर रहा है।

संदर्भ सूची :-

* सत्य के प्रयोग (लेखक - गांधी जी
* मेरे सपनों का भारत
* ग्राम स्वराज
* गांधी दर्शन और स्वच्छता
* विकिपीडिया
* न्यूज़ पेपर्स कवरेज़ (दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, पत्रिका, नईदुनिया इत्यादि)
* www.pmindia.gov.in
* www.indiagovt.in
* www.swachabharatmission.govt.in
* क्लीन सिटी इंदौर के स्वच्छता मॉडल का अवलोकन